Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

PSA

भजन संहिता 1:1–6, भजन संहिता 2:1–12, भजन संहिता 8:1–9, भजन संहिता 22:1–31, भजन संहिता 23:1–6, भजन संहिता 51:1–19, भजन संहिता 73:1–28, भजन संहिता 105:1–106:48, भजन संहिता 110:1–7, भजन संहिता 116:1–19, भजन संहिता 119:1–176, भजन संहिता 137:1–9, भजन संहिता 146:1–150:6

भजन संहिता 1:1–6

भजन संहिता 1 परमेश्वर की आशीषों, वादों और लोगों के लिए नियमों के बारे में एक कविता है। यह दो प्रकार के जीवन का वर्णन करती है। यह लोगों का चुनाव है कि वे किस प्रकार का जीवन जीना चाहते हैं।

जीवन जीने का एक तरीका है, परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना। यह उत्तम जीवन जीने का तरीका है। यह उन आशीषों का आनंद लेने की ओर ले जाता है जो परमेश्वर ने देने का वादा किया है। इस्राएलियों (इस्राएल) के लिए, परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने का मतलब था प्रभु की व्यवस्था का पालन करना। यह सीने पर्वत की वाचा थी जो मूसा की व्यवस्था में दर्ज थी। इसके प्रति विश्वासयोग्य रहने से वाचा की आशीषें मिलती थी।

परमेश्वर के नियमों ने इस्राएलियों को यह समझने में मदद की कि परमेश्वर अपने लोगों (परमेश्वर के लोगो) से क्या चाहते हैं। जो लोग परमेश्वर से आशीष पाना चाहते हैं, वे वही करते हैं जो परमेश्वर चाहते हैं। यह उन्हें आनंद से भरे जीवन की ओर ले जाता है। ये लोग उन स्वस्थ पेड़ों की तरह होते हैं जो अच्छे फल देते हैं। वे चाहे कुछ भी हो जाए, मजबूत और स्थिर रहते हैं। परमेश्वर उनके लिए वैसे ही प्रावधान करते हैं जैसे एक बहती पानी की धारा पेड़ के लिए पानी प्रदान करती है।

दूसरा जीवन जीने का तरीका यह है कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने से इनकार कर दिया जाए। यह बुरे काम करने का चुनाव है। यह एक ऐसा मार्ग है जो लोगों को नष्ट करता है और मृत्यु की ओर ले जाता है। परमेश्वर उन लोगों के खिलाफ न्याय लाते हैं जो इस मार्ग को चुनते हैं। कई साल बाद यीशु ने भी मत्ती 7:13–23 में जीवन जीने के इन दो तरीकों के बारे में बात की थी।

भजन संहिता 2:1–12

भजन संहिता 2 राष्ट्रों के लिए एक कविता है। यह परमेश्वर की आशीषों और वादों के बारे में है। यह उस राजा के बारे में भी बताती है जिसे परमेश्वर ने राष्ट्रों पर शासन करने के लिए अलग किया है।

भजन संहिता 2 यह वर्णन करती है कि राष्ट्र या जाति दो तरीकों से जी सकते हैं। एक तरीका यह है कि वे परमेश्वर का आदर करें और उसकी सेवा करें। यह एक बुद्धिमानी का चुनाव है और यह वह तरीका है जिससे राष्ट्र या जाति अच्छे से जी सकते हैं। इस तरीके को चुनने का अर्थ है कि राष्ट्र या जाति वही करते हैं जो परमेश्वर चाहते हैं। उनके अगुवे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं और यह मानते हैं कि परमेश्वर ही वह शासक हैं जिनके पास पूर्ण अधिकार है। वे मानते हैं कि केवल परमेश्वर के पास ही उनके राष्ट्र या जाति की सुरक्षा करने की शक्ति है। परमेश्वर चाहते हैं कि सभी राष्ट्र और सभी लोगों के समूह उनका अनुसरण करें। सभी राष्ट्र या जातियाँ जो उनका अनुसरण करने का चुनाव करते हैं, वे आशीषित होते हैं।

जीवन जीने का दूसरा तरीका है परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने से इनकार करना। यह राष्ट्रों को न्याय और विनाश की ओर ले जाता है। इस रास्ते को चुनने का मतलब है कि राष्ट्र परमेश्वर के अधिकार को स्वीकार नहीं करते या उनकी आज्ञाओं का पालन नहीं करते। इसके बजाय, वे बुरे काम करते हैं। इससे परमेश्वर क्रोधित होते हैं। ये राष्ट्र उस राजा की आज्ञा का पालन नहीं करते जिसे परमेश्वर ने नियुक्त किया। परमेश्वर ने स्वयं को इस राजा का पिता कहा। इस प्रकार राजा को परमेश्वर का पुत्र माना गया। परमेश्वर ने इस राजा को सभी राष्ट्रों पर अधिकार दिया।

इस्राएलियों ने समझा कि यह भजन परमेश्वर की दाऊद के साथ वाचा के बारे में बात कर रहा था। यह दाऊद की वंशावली के राजाओं के बारे में बात कर रहा था। भजन 72 ने वर्णन किया कि इन राजाओं को किस प्रकार का शासक होना चाहिए। उन्हें न्यायपूर्ण निर्णय लेना चाहिए और सही कार्य करना चाहिए। उन्हें बुराई करने वालों को दंडित करना चाहिए। दाऊद की वंशावली के राजा यरूशलेम में शासन करते थे।

भजन संहिता 2 परमेश्वर के पवित्र पर्वत सिय्योन के बारे में बात करता है। यरूशलेम का दूसरा नाम सिय्योन था। वह

पवित्र था क्योंकि वहां मंदिर था, लेकिन बाबुल की सेनाओं ने यरूशलेम और मंदिर को नष्ट कर दिया। उसके बाद, दाऊद के परिवार की वंशावली से कोई और राजा नहीं हुआ।

इसीलिए यहूदी भजन संहिता 2 को भविष्य के लिए एक वादा समझने लगे। वे प्रतीक्षा कर रहे थे कि परमेश्वर एक राजा भेजें जो परमेश्वर के पुत्र के रूप में शासन करेंगे। वे इस राजा को मसीहा कहते थे। नए नियम के लेखकों ने समझा कि भजन संहिता 2 यीशु के बारे में एक भविष्यवाणी थी। इसके बारे में मत्ती 3:17, प्रेरितों के काम 4:23–26 और 13:32–33 में बात की गई थी।

भजन संहिता 8:1–9

भजन 8 परमेश्वर की स्तुति करता है कि वह अस्तित्व में मौजूद सभी रचनाओं का सृष्टिकर्ता है। परमेश्वर ने आकाश की रचना की। इसमें स्वर्गीय संसार और आध्यात्मिक प्राणी जैसे स्वर्गदूत शामिल हैं।

स्वर्ग में चंद्रमा और सितारों वाला आकाश भी शामिल है। उत्पत्ति 1 में परमेश्वर द्वारा आकाश में ज्योतियों को बनाने का वर्णन किया गया है। उन्होंने उन्हें दिन और रात के शासक होने के लिए बनाया। वे सुनिश्चित करते हैं कि समय और ऋतुएँ उसी प्रकार काम करें जैसे परमेश्वर चाहते हैं।

भजन संहिता 19 यह बताता है कि जब आकाश वह कार्य करता है जो परमेश्वर ने उसे दिया है तो क्या होता है। सूर्य, चंद्रमा और तारे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और दिन और रात को अलग रखते हैं। इस प्रकार वे पृथ्वी पर सभी को परमेश्वर की महिमा के बारे में बताते हैं। इस प्रकार वे दिखाते हैं कि प्रभु का नाम पृथ्वी पर महान है।

एक महान नाम का होना यह दर्शाता है कि परमेश्वर महान और अद्भुत हैं। इसका यह अर्थ है कि परमेश्वर को पृथ्वी पर हर जगह सम्मान मिलना चाहिए। इसका यह अर्थ है कि परमेश्वर के पास सब कुछ पर पूर्ण शक्ति और अधिकार है। परमेश्वर चुनते हैं कि वे अपना अधिकार मनुष्यों के साथ साझा करें।

भजन 8 इसे एक मुकुट के रूप में वर्णित करता है जिसे परमेश्वर ने उन पर रखा। मुकुट इस बात का संकेत है कि मनुष्य शासक हैं। वे पृथ्वी पर परमेश्वर द्वारा बनाई गई हर चीज़ पर शासक होने चाहिए। उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि परमेश्वर जो चाहते हैं वह पृथ्वी पर पूरा हो। इस प्रकार वे परमेश्वर का सम्मान करते हैं और दिखाते हैं कि उनका नाम महान है।

भजन संहिता 22:1–31

भजन 22 परमेश्वर से सहायता के लिए पुकार है। इस्राएलियों ने समझा कि यह भजन दाऊद का था लेकिन वे सभी भी इसका उपयोग कर सकते थे। यीशु ने इस भजन के शब्दों का उपयोग तब किया जब वे क्रूस पर मर रहे थे (मत्ती 27:46)।

यह भजन लोगों को यह याद रखने में मदद करता था कि परमेश्वर के बारे में क्या सत्य है। सत्य यह है कि परमेश्वर राजा हैं और वे वही करते है जो सही है। उनके पास किसी भी अन्य शासक से अधिक शक्ति और अधिकार है। परमेश्वर उन लोगों की सुनते हैं जो उन्हें सहायता के लिए पुकारते हैं और परमेश्वर उन्हें बचाते हैं।

यह भजन लोगों को उनके दुःख के समय में उनकी अनुभूति को व्यक्त करने में मदद करता था। वक्ता ऐसा महसूस करता है जैसे परमेश्वर उन्हें बचाने के लिए कुछ नहीं कर रहे थे। उसे लगा जैसे परमेश्वर दूर है और उसे छोड़ दिया है। वक्ता ने उन लोगों का वर्णन किया जो उसके साथ बुरा व्यवहार कर रहे थे। वे मजबूत बैल, गर्जन करते शेर, जंगली बैल और कुत्तों के झुंड की तरह थे। केवल परमेश्वर ही उसे इन शत्रुओं से बचा सकते थे। वक्ता ने साहसपूर्वक परमेश्वर से पूछा कि उन्होंने अभी तक उसे क्यों नहीं बचाया।

यह भजन लोगों को परमेश्वर पर विश्वास करने में मदद करता है। वक्ता ने परमेश्वर पर विश्वास किया कि वे उन्हें बचाएंगे, भले ही यह अभी तक नहीं हुआ था। उसे पूरी तरह से यकीन था कि परमेश्वर ऐसा करेंगे। उसे पता था कि बाद में वह दूसरों को बताएगा कि परमेश्वर ने उसके लिए क्या किया है। यह घोषणा लोगों को आशा से भर देगी। यह दूसरों को परमेश्वर की स्तुति, आदर और आराधना करने में मदद करेगी।

भजन संहिता 23:1–6

भजन 23 परमेश्वर पर विश्वास करने के बारे में है। यह परमेश्वर को एक चरवाहे के रूप में वर्णित करता है।

जो इस भजन को प्रार्थना के रूप में लेते है, उन्हें भेड़ के रूप में वर्णित किया गया है। चरवाहा भेड़ों का मार्गदर्शन करता है और सुनिश्चित करता है कि उनके पास वह सब कुछ हो जो उन्हें चाहिए।

भेड़ें खतरे का सामना करती हैं, लेकिन चरवाहा उनके पास होता है। वह उनकी रक्षा करता है और उन्हें सांत्वना देता है।

कई वर्षों बाद यीशु ने स्वयं को अच्छे चरवाहे के रूप में वर्णित किया (यूहन्ना 10:11)।

यह भजन इस बात का भी वर्णन करता है कि विभिन्न तरीकों से लोगों की देखभाल करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा किया जा सकता है। वे उनके लिए अच्छी वस्तुएं प्रदान करते हैं। इन

वस्तुओं का वर्णन एक पर्व की तरह और तेल से अभिषिक्त होने की तरह किया गया था।

प्रत्येक व्यक्ति का प्याला इतना छोटा है कि उसमें वह सब कुछ नहीं समा सकता जो परमेश्वर प्रदान करते हैं। वे इन आशीषों का आनंद तब भी ले सकते हैं जब वे खतरे का सामना कर रहे हों। उनके दुश्मन पास में होते हैं, लेकिन वे इनका पीछा नहीं कर पाते। इसके बजाय, परमेश्वर की भलाई और प्रेम उनका अनुसरण करते हैं।

वे विश्वास करते हैं कि वे सदा के लिए परमेश्वर के घर में रहेंगे। प्रभु का घर मंदिर था। यह वर्णन करने का एक तरीका था कि वक्ता परमेश्वर के कितना करीब था।

भजन संहिता 51:1–19

भजन 51 पाप को स्वीकार करने के बारे में एक कविता है। दाऊद का बतशेबा और उरिय्याह के विरुद्ध किया गया पाप यह दिखाता हैं कि पाप कितना गंभीर और हानिकारक होता है।

दूसरों के विरुद्ध किए गए पाप, परमेश्वर के विरुद्ध भी होते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने सभी को बनाया है और उनका उनके प्रति कोमल और विश्वासयोग्य प्रेम है। इस्राएली समझते थे कि पाप उन्हें अशुद्ध बना देता है। यह उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति से दूर रखता था। यह ऐसा था जैसे परमेश्वर से दूर भेज दिया जाना और उनसे पवित्र आत्मा को ले लिया जाना।

परमेश्वर ने इस्राएलियों को शुद्ध और पवित्र बनाने के लिए कई तरीके दिए। एक तरीका था कि एक जूफ़ा के पौधे को विशेष जल में डुबोया जाए। फिर उस जल को किसी पर छिड़ककर उन्हें धोया जाता था (गिनती 19)। दूसरा तरीका था पाप बलि या होम बलि चढ़ाना।

धोया जाना और बलिदान देना इस्राएलियों के लिए परमेश्वर की आराधना करने का महत्वपूर्ण भाग था। ये केवल व्यक्ति के शरीर के बाहरी हिस्से को ही व्यक्त कर पाते हैं। वे यह नहीं दिखाते थे कि व्यक्ति के हृदय के अंदर क्या हुआ है। खुद के हृदय में ही लोग अपने पाप के लिए सच्चा पश्चाताप महसूस कर सकते हैं।

परमेश्वर लोगों के हृदयों की गहराई से चिंता करते हैं। जब लोग पाप करते हैं, तो उन्हें परमेश्वर के सामने स्वयं को विनम्र बनाना चाहिए। उन्हें पूरी ईमानदारी से स्वीकार करना चाहिए कि उन्होंने क्या गलत किया है। यही एक टूटे हुए मन का अर्थ है। आत्मा व्यक्ति का आध्यात्मिक भाग है। लोग अपने टूटे हुए मन को परमेश्वर को अर्पित करते हैं। वे उनसे दया करने और उन्हें क्षमा करने की प्रार्थना करते हैं।

केवल परमेश्वर ही किसी व्यक्ति के दोष को दूर कर सकते हैं। वे किसी व्यक्ति को पाप को ना कहने में सक्षम बना सकते हैं। वे लोगों को उनके प्रति विश्वासयोग्य बनने में सक्षम बना सकते हैं।

भजन संहिता 73:1–28

भजन 73 परमेश्वर पर विश्वास करने के विषय में सीखने के बारे में है। पद 1 में वक्ता परमेश्वर के बारे में एक सच्ची बात कहते हैं। परमेश्वर उन लोगों के प्रति अच्छे हैं जिनके हृदय शुद्ध हैं। इस्राएलियों के लिए, शुद्ध हृदय का अर्थ था परमेश्वर की सच्चे मन से आराधना और आज्ञापालन करना।

लेकिन वक्ता हमेशा यह नहीं मानते थे कि यह बात परमेश्वर के बारे में सच है। इसका कारण यह था कि वक्ता पीड़ा में था। वक्ता का हृदय शुद्ध था लेकिन वह कष्ट में था। वक्ता को ऐसा लगता था कि परमेश्वर शुद्ध हृदय वाले लोगों को दंडित करते है। ऐसा भी लगता था कि परमेश्वर घमंडी और पापी लोगों को आशीष देते है। घमंडी और पापी लोग हमेशा अमीर और स्वस्थ रहते थे। उन्हें कभी भी उनके बुरे कामों के लिए दंडित नहीं किया जाता था। यह अनुचित था। यह मूसा की व्यवस्था के कुछ हिस्सों द्वारा वर्णित नमूने के खिलाफ था। यह कई नीतिवचनों द्वारा वर्णित नमूने के खिलाफ भी था। नीतिवचन 11:8 सिखाता है कि मुसीबत उन पर आती है जो गलत करते हैं।

अय्यूब ने पापी लोगों के बारे में वे ही बातें देखीं जो भजन 73 के वक्ता ने देखीं। अय्यूब ने देखा कि उसके पास वे समस्याएं नहीं थी जो अधिकांश अन्य लोगों के पास थीं (अय्यूब 21:6–18)। भजन 73 के वक्ता ने इस सब के बारे में ईर्ष्या, भ्रम और परेशानी महसूस की, लेकिन मंदिर में वक्ता का मन, हृदय और आत्मा बदल गए। मंदिर में वक्ता को कुछ महत्वपूर्ण समझ में आया। परमेश्वर न्याय लाएंगे। परमेश्वर हर उस चीज़ को रोक देंगे जो अनुचित और बुरी है। वे उन सभी को नष्ट कर देंगे जो उनकी आज्ञा मानने से इनकार करते हैं।

भजन 73 में वक्ता के लिए यह अभी तक नहीं हुआ था, लेकिन वक्ता को पूरी तरह से यकीन हो गया था कि यह भविष्य में होगा। इसलिए वक्ता ने पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा किया। उनके पास स्वर्ग में परमेश्वर के अलावा कोई नहीं था। इसका मतलब है कि वक्ता ने झूठे देवताओं से मदद नहीं मांगी। वक्ता को पृथ्वी पर परमेश्वर के अलावा कुछ भी नहीं चाहिए था। इसका मतलब है कि उसने उसको बचाने के लिए परमेश्वर के अलावा किसी और पर भरोसा नहीं किया। वक्ता अभी भी पीढ़ा में था और अभी भी परमेश्वर से न्याय लाने की प्रतीक्षा कर रहा था। जब तक वह प्रतीक्षा कर रहा था, तो वह जानता था कि परमेश्वर उसके साथ है। वक्ता ने इसे इस तरह वर्णित किया जैसे परमेश्वर उसका हाथ पकड़े हुए है। परमेश्वर

के निकट होने से वक्ता को यकीन हो गया कि परमेश्वर वास्तव में अच्छे है।

भजन संहिता 105:1–106:48

भजन 105 और 106 परमेश्वर के विश्वासयोग्य प्रेम की प्रशंसा करते हैं। भजन 105 इस बात को इस्राएलियों को उन अद्‌भुत कार्यों का स्मरण दिलाकर प्रदर्शित करता है जो परमेश्वर ने उनके लिए किए हैं। भजन 106 इसे एक अलग तरीके से करता है। यह यहूदियों को याद दिलाता है कि परमेश्वर तब भी विश्वासयोग्य थे जब वे उन्हें भूल गए थे।

इन भजनों में उल्लेखित घटनाएँ बाइबल की अन्य पुस्तकों में दर्ज हैं। भजन 105 में जो घटनाएँ हैं, वे उत्पत्ति से लेकर यहोशू तक की पुस्तकों में दर्ज हैं। भजन 106 में जो घटनाएँ हैं, वे निर्गमन से लेकर 2 इतिहास तक की पुस्तकों में दर्ज हैं।

भजन 105 में, इस्राएली लोग परमेश्वर की वाचाओं, चमत्कारों और व्यवस्था को याद करते हुए उनकी स्तुति करने लगे। परमेश्वर ने जो किया था, उसके बारे में बात करना उनके बच्चों को परमेश्वर के बारे में सिखाने का एक तरीका था।

भजन 105 इस बात की याद दिलाकर समाप्त होता है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को कनान में क्यों बसने दिया। उन्हें परमेश्वर की आज्ञा माननी थी और एक याजकों का राज्य और एक पवित्र राष्ट्र के रूप में जीवन बिताना था, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने बार-बार परमेश्वर की अवज्ञा की। उन्होंने सीनै पर्वत की वाचा का पालन करने के बजाय आसपास की जातियों की प्रथाओं का अनुसरण किया।

भजन 106 इस इतिहास को बताता है। पद 47 में दिखाता है कि इस भजन के वक्ता निर्वासन में रह रहे थे। उन्हें अपने देश से दूर रहने के लिए मजबूर किया गया था। यह उनके और उनके लोगों के पापों के लिए परमेश्वर का न्याय था।

उन्होंने उन बुरी चीजों के बारे में बात की जो उन्होंने एक कारण से की थीं। इससे उन्हें समझने में मदद मिली कि क्यों परमेश्वर ने उनके खिलाफ न्याय किया था। इससे उन्हें परमेश्वर के बारे में कुछ समझने में भी मदद मिली। परमेश्वर हमेशा अपने लोगों के प्रति विश्वासयोग्य बने रहे। बार-बार परमेश्वर के लोग उन्हें भूल जाते थे, लेकिन परमेश्वर हमेशा अपनी वाचा को याद रखते थे। उन्होंने अपने लोगों को क्षमा किया और जब वे उन्हें पुकारते थे, तो उन्हें बचाया। इसने वक्ताओं को इतना साहस दिया कि वे परमेश्वर से फिर से बचाने के लिए प्रार्थना कर सकें। भजन 106 की शुरुआत में वक्ता को पूरा विश्वास था कि परमेश्वर उन्हें बचाएंगे। जब परमेश्वर उन्हें बचाएंगे, तो परमेश्वर के लोग उत्सव मनाएंगे, धन्यवाद देंगे और उनकी स्तुति करेंगे।

भजन संहिता 110:1–7

भजन 110 उन भजनों में से एक है जो परमेश्वर से किसी व्यक्ति की प्रार्थना नहीं है। इसके बजाय, यह दाऊद के वंश से एक निश्चित राजा के लिए परमेश्वर के वादे की घोषणा करता है। परमेश्वर इस प्रभु और राजा को अपने दाहिने ओर बैठने देंगे। इसका अर्थ था कि परमेश्वर ने उसे अधिकार और सम्मान का स्थान दिया था।

यह राजा हमेशा के लिए मलिकिसिदक के समान एक याजक होगा। दाऊद प्रभु और राजा थे, लेकिन यहाँ पर प्रभु और राजा दाऊद नहीं था। इस्राएल का कोई भी राजा याजक के रूप में सेवा नहीं करता था। याजक लेवी के वंश से होते थे, लेकिन वे हमेशा सेवा नहीं कर सकते थे क्योंकि वे मर जाते थे।

कई वर्षों बाद, जकर्याह ने एक ऐसे व्यक्ति के बारे में भविष्यवाणी की जो एक याजक और राजा था। यह व्यक्ति राजा और याजक के पदों को अपने आपमें संयोजित करेगा (जकर्याह 6:13)। कई यहूदी लोग इस व्यक्ति के बारे में कुछ समझने लगे। उन्होंने समझा कि भजन 110 और जकर्याह मसीहा के बारे में बात कर रहे थे।

यीशु ने भजन 110 के शब्दों का उपयोग कुछ दिखाने के लिए किया। यीशु ने दिखाया कि वह वही प्रभु हैं जिसके बारे में भजन में कहा था (मत्ती 22:41–46)। नए नियम के लेखकों ने भी इसे समझा (प्रेरि 2:33–36)। यीशु वही याजक और राजा है जिसके बारे में परमेश्वर ने भजन 110 में वादा किया था। इब्रानियों के लेखक ने दिखाया कि यह कैसे सत्य था (इब्रानियों 6:20 – 7:28)।

भजन संहिता 116:1–19

भजन 116 परमेश्वर को धन्यवाद देने की एक कविता है। वक्ता बताता है कि वह परमेश्वर से क्यों प्रेम करता है। यह इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने उसकी सहायता के लिए उसकी पुकार सुनी और उसे बचाने के लिए कार्य किया।

इस भजन में भजन 22 के साथ कई समानताएँ हैं। पहली बात, वक्ता उन बातों को पहचानता है जो परमेश्वर के बारे में सत्य हैं। इसमें परमेश्वर का कोमल प्रेम से भरा होना शामिल है। दूसरी बात, वक्ता वर्णन करता है कि जब वह कष्ट में था तो उसे कैसा महसूस हुआ। वह दु:खी, भयभीत और अत्यंत पीड़ा में था। तीसरी बात, वक्ता ने परमेश्वर पर विश्वास किया, भले ही वह खतरे का सामना कर रहा था।

भजन 22 से जो भिन्नता है वह यह है कि परमेश्वर ने पहले ही वक्ता को बचा लिया है। इसलिए वह परमेश्वर का धन्यवाद कर रहा है। वह कई तरीकों से दिखाता है कि वह आभारी है। वह परमेश्वर की आराधना करत है और बलिदान चढ़ाता है। वह दूसरों को बताता है कि परमेश्वर ने उसके लिए क्या किया

है। वह परमेश्वर से किए गए वादों को निभाता है और उसकी निष्ठा से सेवा करता है।

भजन संहिता 119:1–176

भजन 119 परमेश्वर के लोगों के लिए सीनै पर्वत की वाचा को एक आशीष के रूप में वर्णित करता है। यह परमेश्वर की अद्‌भुत व्यवस्था की प्रशंसा करता है। ये वे व्यवस्थाए हैं जो मूसा की व्यवस्था में दर्ज हैं। उनका पालन करने से बुद्धि, आनंद और जीवन प्राप्त होता है।

कविता को 22 खंडों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक खंड में आठ पद हैं। प्रत्येक खंड की शुरुआत में इब्रानी भाषा का एक शब्द है। ये इब्रानी वर्णमाला के अक्षरों के नाम हैं। भजन 119 एक वर्णमाला कविता है।

भजन संहिता 137:1–9

भजन 137 में लोग परमेश्वर से शिकायत करते हैं। वे विलाप करते हैं और उन्हें बताते हैं कि वे कितने दु:खी और क्रोधित हैं। वे हो रही अन्यायपूर्ण बातों के बारे में दु:खी और क्रोधित हैं। बाबुल की सेनाओं ने दक्षिणी राज्य पर कब्जा कर लिया था। उन्होंने यरूशलेम और मंदिर को नष्ट कर दिया था। उन्होंने कई यहूदियों को बंदी बना लिया था और उन्हें बाबुल में रहने के लिए मजबूर किया था।

इस भजन के वक्ता वे यहूदी थे जिन्हें निर्वासन में रहने के लिए मजबूर किया गया था। वे बहुत दु:खी थे। बाबेल के लोगों ने उनका मजाक उड़ाया। भजन 89 ने भी इसके बारे में बात की। उस भजन ने भी अन्य राष्ट्रों द्वारा कही गई बुरी बातों के लिए परमेश्वर से शिकायत की। इसने परमेश्वर पर यरूशलेम की दीवारों को गिराने का आरोप लगाया। इसने परमेश्वर पर दाऊद के साथ अपनी वाचा को तोड़ने का आरोप लगाया। यह इसलिए था क्योंकि परमेश्वर ने दाऊद के वंशज राजा या उसके नगर की रक्षा नहीं की। वह नगर यरूशलेम था।

भजन 137 के वक्ता कभी यरूशलेम को नहीं भूलना चाहते थे। परमेश्वर ने यरूशलेम में अपना नाम रखने का वादा किया था (2 इतिहास 6:6)। इसका अर्थ यह है कि लोग जानते थे कि परमेश्वर वहाँ उनके साथ उपस्थित है। यदि वे यरूशलेम को भूल जाते, तो यह परमेश्वर को पूरी तरह से भूलने के समान होता।

भजन 137 के वक्ताओं ने परमेश्वर से यरूशलेम को नष्ट करने वालों के बारे में प्रार्थना की। उन्होंने परमेश्वर को याद दिलाया कि कैसे एदोमियों ने उस भयानक घटना का उत्सव मनाया था। वे चाहते थे कि परमेश्वर एदोमियों और बाबेलवासियों के पापों को याद रखें। यहूदी विश्वास करते थे कि परमेश्वर न्यायी के रूप में कार्य करेंगे और न्याय लाएंगे। वे चाहते थे कि वे उन पर न्याय लाएं जिन्होंने उन्हें चोट पहुंचाई थी।

भजन संहिता 146:1–150:6

भजन संहिता की पुस्तक पाँच स्तुति के गीतों के साथ समाप्त होती है। ये भजन परमेश्वर की स्तुति करते हैं क्योंकि वह सदा के लिए सब कुछ और सभी पर शासन करने वाला राजा है। वे उसकी स्तुति करते हैं क्योंकि वह सब कुछ का सृष्टिकर्ता है। वे उसकी स्तुति करते हैं क्योंकि वह सृष्टि के हर भाग की देखभाल करता है।

इसमें तारों, मौसम, भूमि, पौधों और जानवरों की देखभाल करना शामिल है। इसमें यह सुनिश्चित करना शामिल है कि ज़रूरतमंद लोगों के लिए न्याय किया जाए। परमेश्वर बाहरी लोगों, कैदियों, विधवाओं और उन बच्चों की भी देखभाल करता है जिनके माता-पिता का निधन हो चुका है। वह उन लोगों की देखभाल करता है जो अंधे, भूखे, असहाय या बुरी तरह से व्यवहार किए गए हैं। वह प्रत्येक मानव प्राणी के लिए गहराई से परवाह करता है।

हर एक जीव और वस्तु जो परमेश्वर द्वारा बनाई गई है, उसकी स्तुति करने में सक्षम है। भजन 149 और भजन 150 उन तरीकों के बारे में बात करते हैं जिनसे मनुष्य परमेश्वर की स्तुति करते हैं। वे अपने हाथों से उसकी स्तुति करते हैं। इसका अर्थ है कि वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं। परमेश्वर उनका उपयोग उन पर न्याय लाने के लिए करते हैं जो उनका आदर और आज्ञा पालन करने से इनकार करते हैं।

मनुष्य भी अपने मुख से परमेश्वर की स्तुति करते हैं। इसका अर्थ है कि उनके शब्द परमेश्वर को आदर और महिमा देते हैं। वे अपने जीवन में परमेश्वर के कार्यों की स्तुति में गीत गाते हैं। इन गीतों को नए गीत कहा जाता था। वे नए थे क्योंकि वे परमेश्वर की दया को नए तरीकों से प्राप्त करने पर आधारित थे। गाना, नृत्य करना और वाद्य यंत्र बजाना कुछ ऐसे तरीके हैं जिनसे मनुष्य परमेश्वर की स्तुति करते हैं। ये सब उनके आनंद को दिखाने के तरीके हैं। परमेश्वर के लोग आनंद से भर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर उन पर प्रसन्न होते है और उन्हें आशीष देते है।